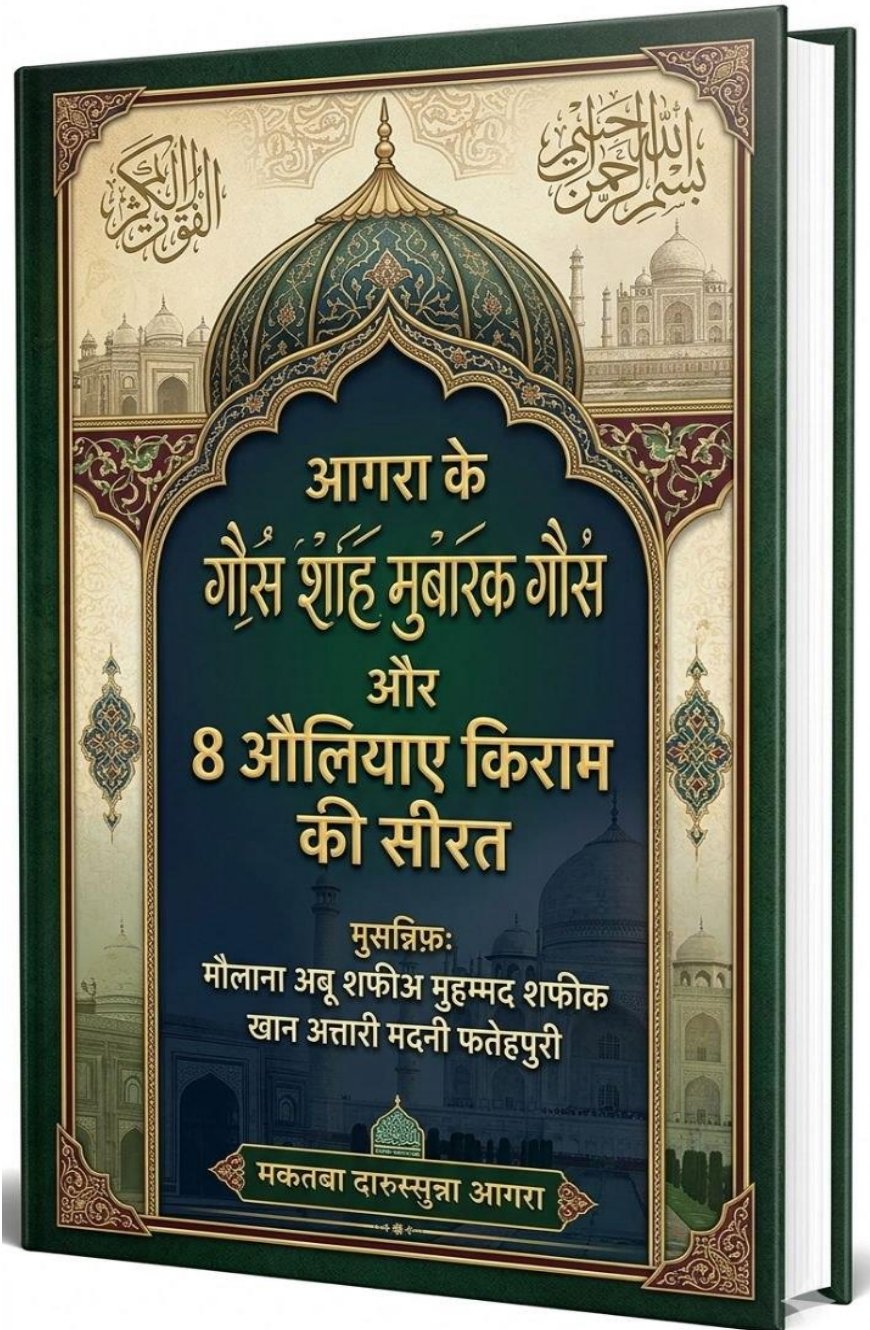
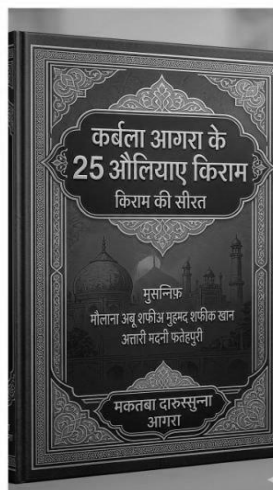
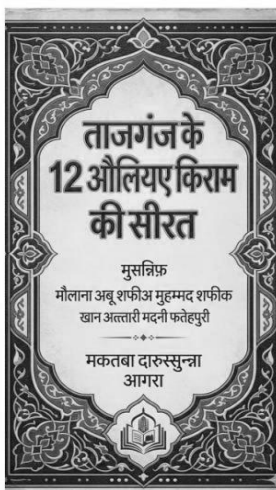
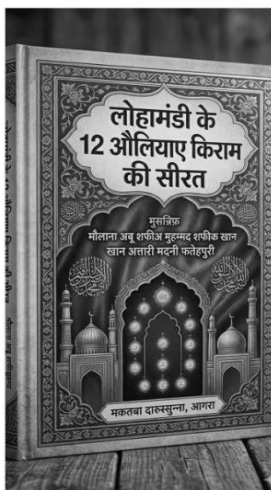
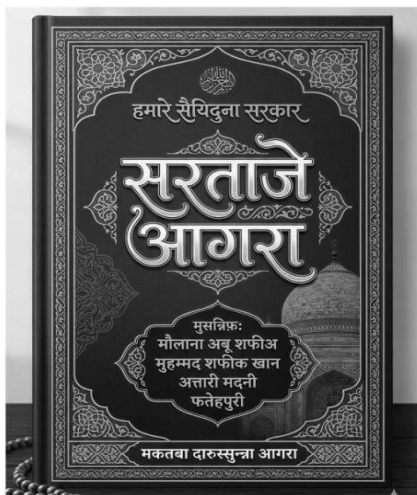
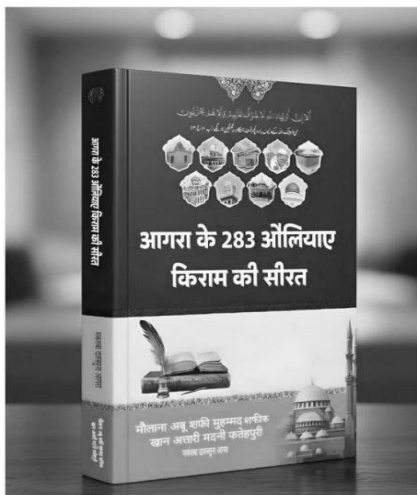




आगरा के औलियाए किराम की सीरत को आम करने में मकतबा दारुस्सुन्ना आगरा का साथ दें और शादियों, दावतों और मरहूमीन के ईसाले सवाब के लिए किताब तकसीम करवायें और औलियाए किराम के फ़ैज़ान से मालामाल हों ।



किताबें हासिल करने के लिए इस नंबर पर कॉल कीजिए :8808693818

मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान अत्तारी मदनी फतेहपुरी

मुसन्निफ़ का तआरुफ़

नाम और निस्बत

नाम **मुहम्मद शफीक़ खान**, वालिद का नाम **मुहम्मद शरीफ़ खान** है, सिल्सिला क़ादरिया रज़विया अत्तारिया में शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिए दा'वते इस्लामी, हज़रत अल्लामा मौलाना अबू बिलाल, **मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादरी** रज़वी से **2004 ईस्वी** में बैअत होने की वजह से अपने नाम के साथ अत्तारी लिखते हैं, आपकी विलादत कस्बा ललौली जिला फतेहपुर हंसवा, सूबा यू पी, हिंद में हुई, आप की तारीखे पैदाइश **10 जून 1986 ईस्वी** है।

दीनी माहौल से वाबस्तगी और सफ़रे इल्म

हज़रत ने इब्तिदाअन हिंदी इंग्लिश की ता'लीम हासिल करके सन **2000 ईस्वी** में ए. सी. का काम सीखने और करने के लिये बम्बई चले गये थे और वहां पर **4 साल** क्रियाम किया फिर **2004 ईस्वी** में अपने वतन लौटे और वतन में ही उन्हें दा'वते इस्लामी का दीनी माहौल मिला, दा'वते इस्लामी के दीनी माहौल से वाबस्ता होने के बाद मुख्तलिफ़ कोर्सेज़ किये और **2006 ईस्वी** में अपने ही इलाके के दारुल उलूम बनाम जामिया अरबिया गुलशने मा'सूम कस्बा ललौली में **क्रारी इक़बाल अहमद अत्तारी** से कुरआने पाक नाज़िरा और हज़रत मौलाना अतीकुर्रहमान मिस्बाही से दर्से निज़ामी के दरजए ऊला और कुछ दरजाए सानिया की किताबें पढ़ीं, इसके बाद मज़ीद ता'लीम हासिल करने के लिये **चिरैयाकोट जिला मऊ** तशरीफ़ ले गये और वहां दरजए सानिया मुकम्मल करने के बाद अहले सुन्नत के अज़ीम इल्मी इदारे अल

जामिअतुल अशरफिया मुबारकपुर आ'ज़मगढ़ में मतलूबा दरजए सालिसा का टेस्ट दिया और अल्लाह पाक के फ़ज़ल से कामयाब होने के बाद दरजए सालिसा की तालीम वहीं हासिल की, फिर दरजए राबिआ दारुल उलूम ग़ौसिया (जो जिला आ'ज़मगढ़ के गाँव सरय्या में वाक़ेअ है) में मुकम्मल की, फिर उसके बाद दा'वते इस्लामी के जामिअतुल मदीना, फैज़ाने अत्तार नेपालगंज, नेपाल में दाखिला लिया और दरजए खामिसा से दौरए हदीस तक की ता'लीम वहीं मुकम्मल फरमाई।

तदरीसो तसनीफ़ की शुरुआत

2014 में फरागत के बाद तदरीस के लिये दा'वते इस्लामी के जामिअतुल मदीना फैज़ाने सिद्दीक़े अकबर, आगरा तशरीफ़ ले गये और एक साल वहां तदरीस फरमाई, फिर मज़ीद तदरीस के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी मरकज़ के हुक्म पर बंगलादेश के दारुल हुकूमत ढाका के जामिअतुल मदीना तशरीफ़ ले गये और वहीं पर दा'वते इस्लामी के जामिआत के दरजए सानिया में चलने वाली इल्मे सर्फ़ की किताब बनाम मराहुल अरवाह की उर्दू शरह शाफ़िकुल मिस्बाह और दरजए राबिआ में चलने वाली इल्मे नहव की किताब बनाम शरह जामी की उर्दू शरह अश शफीकुन नोअमानी तसनीफ़ फरमाई।

उसके बाद फिर जामिअतुल मदीना फैज़ाने सिद्दीक़े अकबर आगरा तशरीफ़ लाकर दरजए सानिया में चलने वाली हदीस की किताब बनाम अल अरबईने नवाविय्या की उर्दू शरह शफ़ीकिया तहरीर फरमाई, और तब से अब तक तस्नीफ़ात का सिलसिला जारी है। आखिरी मालूमात के मुताबिक अब तक कुल 65 से ज़ाइद किताबें तसनीफ़ हो चुकी हैं।

खिलाफ़तो इजाज़त

25 अप्रैल 2024 ईस्वी को शागिर्दे हाफिज़े मिल्लत, मुरीदे मुफ़्तिअ आज़म हिन्द, खलिफ़ए बुरहाने मिल्लत, मुबल्लिगे इस्लाम, हज़रत अल्लामा मौलाना अब्दुल मुबीन नोअमानी साहिब ने सिलसिलए कादरिया, रज़िव्या की खिलाफ़तो इजाज़त से नवाज़ा।

खिदमते दीन

हज़रत जिस तरह एक मुदर्रिस और मुसन्निफ़ हैं उसी तरह मुक्रर्रि और मुबल्लिग भी हैं। आप के इस्लाही बयानात खौफे खुदा व इश्क़े मुस्तफा से लबरेज़ होते हैं। सुनने वालों पर रिक्कत तारी होती और दीन से मुहब्बत नसीब होती है। मज़ीद वक्रतन फ़वक्रतन मुख्तलिफ़ दीनी तहरीकें भी चलाते रहते हैं। अभी हाल ही में {दीन सीखो और इनाम पाओ} के नाम से घर घर दीनी तालीम पहुँचाने की तहरीक शुरू फरमाई है। अल्लाह पाक हज़रत की इस कोशिश को अपनी बारगाह में क़बूल फरमा कर तरक्की अता फरमाये। अमीन

अल्लाह पाक से दुआ है कि मौसूफ़ को बे बहा बरकातो समरात से नवाज़े और इस कारहाए नुमाया को अपनी बारगाह में शर्फ़े क़बूलियत अता करके मौसूफ़ के लिये तोशए आखिरत बनाए। आमीन

अज़ : अल आज़िज़ मुहम्मद शादाब खान मदनी कोटा राजस्थान

मज़ारात पर हाज़िरी का तरीक़ा

सवाल: औलियाए किराम रहमतुल्लाह अलैहिम के मज़ारात पर हाज़िरी का तरीक़ा क्या होना चाहिए ?

जवाब: किसी वली के मज़ार मुबारक पर हाज़िरी का तरीक़ा ये है कि अगर मुम्किन हो तो पायंती यानी क़दमों की तरफ़ से आए, चेहरा मुबारक की तरफ़ मुंह और काबे की तरफ़ पीठ कर के खड़ा हो, कमो बेश चार हाथ यानी दो गज़ दूर रहे, अगर कोई बिल्कुल क़रीब चला गया या ज़्यादा दूर रह गया तब भी कोई गुनाह नहीं है।

तिलावत और दीगर इबादात करने वाले को तशवीश ना हो इस लिए दर्मियानी आवाज़ में इस तरह सलाम अर्ज़ करे अस्सलामु अलैकुम या सय्यिदी यानी ऐ मेरे आक्रा! आप पर सलाम हो।

(فتاویٰ رضویہ، ۹/۵۲۲، خزائن آراء و فتاویٰ مجلس مرکز الاولیاء لاہور)

अब एक बार सूरए फ़ातिहा, 11 मर्तबा कुल हुवल्लाह शरीफ़ अव्वल व आखिर तीन तीन बार दुरूदे पाक पढ़ कर ईसाले सवाब करें, ईसाले सवाब के लिए यही पढ़ना लाज़िमी नहीं है बल्कि कुछ भी पढ़ सकते हैं मिसाल के तौर पर एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ कर भी ईसाले सवाब हो सकता है बल्कि नमाज़ें, रोज़े, हज, उमरा, नेकी की दावत, इन्फ़िरादी कोशिश, रास्ते से कोई पत्थर वग़ैरा हटा दिया ताकि मुस्लमानों को तकलीफ़ ना हो, सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में शिरकत अलगरज़ किसी भी नेक काम का ईसाले सवाब किया जा सकता है लिहाज़ा इस तरह के नेक कामों का सवाब मज़ार वाले बुज़ुर्ग की बारगाह में नज़्र कर दें, फिर वापिस होते हुए उलटे क़दमों पलटें ताकि मज़ार मुबारक को पीठ ना हो।

आगरा के औलिया का मुख्तसर तआरुफ़

عَنْدَ ذِكْرِ الصَّالِحِينَ تَنْزِلُ الرَّحْمَةُ

सालिहीन यानी नेक लोगों के ज़िक्र के वक़्त अल्लाह पाक की रहमत नाज़िल होती है।

शैखुल इस्लाम हज़रत अब्दुल्लाह अंसारी से मनक़ूल है कि जहां तक हो सके अल्लाह पाक के औलिया की बातें याद रखो और जो येह भी ना हो सके तो उन के नाम मुबारक ही याद रखो कि यही काफ़ी हैं।

(بوستانِ اخيار، ص ۱)

हज़रत सुल्तानुल मशाइख़ शैख़ निज़ामुद्दीन औलिया रहमतुल्लाह अलैह अमीर ख़ुसरु रहमतुल्लाह अलैह से अक्सर इरशाद फ़रमाया करते थे कि : ऐ ख़ुसरु! मशाइख़ के मलफ़ूजात यानी उनकी बातों को याद करो और उनका ज़िक्र किया करो, कि उनके ज़िक्र से दिल में कैफ़ीयत पैदा होती है।

(بوستانِ اخيار، ص ۱)

मौलाना सैय्यिद अब्दुल वाहिद बिलग्रामी रहमतुल्लाह अलैह साहिबे सबए सनाबिल फ़रमाते हैं : सालिहीन का ज़िक्र ग़मगीन दिलों के सुकून का सबब होता है, येह बुजुर्ग़ानि दीन अगरचे हमारी ज़ाहिरी निगाहों से दूर और आलमे ख़ाक से रुख़स्त हो कर बहिश्त नशीनों के हम नशीन हैं लेकिन क़ुरआने पाक के फ़रमान से अब तक ज़िंदा हैं और क्रियामत तक ज़िंदा रहेंगे जैसा कि अल्लाह पाक ने इरशाद फ़रमाया :

وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ قُتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمْوَاتًا ۚ بَلْ أَحْيَاءُ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُونَ ﴿۱۶۹﴾

तरजमए कंज़ुल ईमान : और जो अल्लाह की राह में मारे गए हरगिज़ उन्हें मुर्दा ना ख़याल करना बल्कि वो आपने रब के पास ज़िंदा हैं रोज़ी पाते हैं। (प, ४, آل عمران, १६९)।

लेकिन उन बुजुर्गाने दीन के ज़ाहिरी तौर पर इस दुनिया से चले जाने के बाद भी हम उनकी रूहों से उसी तरह फ़ैज़ हासिल कर सकते हैं जैसा कि हम उनकी दुन्यवी ज़िंदगी में फ़ैज़ हासिल करते थे, उनके मुक़द्दस तज़किरे, उन के मुबारक कलिमात (यानी उनकी बातें) हमारी हिदायत का सबब बन सकते हैं, उनके हालात को पढ़ना, लिखना, सुनना इबादत में दाख़िल और बरकत का सबब है और उनके अहकाम व हिदायत की पैरवी नजात का सबब है, उन में वही कीमियाई असर और मक़बूलियत की तासीर मौजूद है जो साहिबे कलिमात की नज़र व ज़बान में मौजूद थी, हाँ ! नियाज़ मंदी, खाकसारी ज़रूरी और अक़्रीदत लाज़िमी है ।

अलबत्ता जहां तक मुम्किन हो औलिया अल्लाह के मज़ारात पर ख्वाहिशाते दुन्यवी को नज़र अंदाज कर के दौलत ख़ुदा शनासी के फ़ैज़ की दुआ करनी चाहिए । आगरा शहर में कई सिलसिलों के बुजुर्गाने दीन मौजूद जिनकी तफ़सील येह है :

खानवादे चिश्तिया के बुजुर्गाने दीन

खानवादे चिश्तिया में शाह नेअमतुल्लाह चिश्ती, मीर अब्दुल्लाह तबरेज़ी, अब्दुल मोमिन चिश्ती, शाह मुहम्मद चिश्ती, शैख मुहम्मदी चिश्ती, मीर मुहम्मद सालेह कशफ़ी, शैख मुनव्वर चिश्ती, शाह यार मुहम्मद चिश्ती, शैख सिधारी चिश्ती, शैख ज़ैनुद्दीन चिश्ती रहमतुल्लाह अलैहिम वगैरा बुजुर्गाने चिशत अहले बहिश्त का तज़किरा इस किताब में मौजूद है ।

खानवादे नक़्शबंदिया के बुजुर्गाने दीन

मशाइख़ीने नक़्शबंदिया में हज़रत शाह अबुल उला, ख़्वाजा मुहम्मद यहया, अमीर अब्दुल्लाह, मीर मुहम्मद नोअमान, ख़्वाजा मुहम्मद मीर, मुहम्मद इब्राहीम, हाफ़िज़ अब्दुल्लाह रहमतुल्लाह अलैहिम वगैरा ।

खानवादाए शत्तारिया के बुजुर्गाने दीन

और मशाइखीने शत्तारिया में शैख ज़ियाउल्लाह, शैख अब्दुल्लाह, शैख बुरहान रहमतुल्लाह अलैहिम वगैरा ।

खानवादाए मदारिया के बुजुर्गाने दीन

और खानवादाए मदारिया में शाह फ़र्रुद्दीन मदारी, मलंग शाह रहमतुल्लाह अलैहिम का तज़िकरा मौजूद है ।

नक्शबंदिया पौधे में चिशितया शाख पैवंद कर के एक जदीद शजर पुर समर इस बाग़ में तैयार किया गया है जो अबुल उलाईया के नाम से मशहूर मारुफ़ है, इस की शाखें दूर दूर तक फैली हुई हैं, इस सिलसिले के बानी हज़रत शाह अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह के इलावा अमीर फ़ैज़ुल उला, अमीर नूरुल उला, अमीर अब्दुल माजिद, अमीर अब्दुल मुन्इम, खलीफ़ा अबुल कासिम, मुल्ला मुहम्मद उमर, सैय्यिद मुहम्मद अफ़ज़ल, सैय्यिद मुहम्मद जाफ़र, शाह फ़रहाद, शैख वली मुहम्मद वगैरा इसी फ़ल आवर दरख्त के औलियाए किबार हैं जिनका ज़िक्रे खैर भी इस किताब में मौजूद है ।

इनके इलावा और भी बहुत सारे बड़े बड़े औलियाए कामिलीन रहमतुल्लाह अलैहिम का हैं जिनके सिलसिलए मारिफ़त का पता नहीं चला, या कई कई सिलसिलों में मुंसलिक हैं, शैख अबुल फत्ताह, मीर अबुल गैस बुखारी, शैख अबू बक्र कुरैशी, सैय्यिद अहमद बुखारी, हाफ़िज़ अहमद, शैख अफ़ज़ल मुहम्मद, सैय्यिद बाक़ी, शैख बा यज़ीद शरवानी, शैख बा यज़ीद खवेशगी, ख्वाजा बख़्तियार, सैय्यिद बदरुद्दीन, सैय्यिद भिकारी, मीर तपां, अमीर सैय्यिद जलाल मुतावक्किल, सैय्यिद जलाल बुखारी, शैख चंदन कुरैशी, मौलाना शैख हसन शीराज़ी, शैख हुसैन बदखशी,

सैय्यिद हुसैन, शाह हैदर, ख्वाजा खिज़र, शैख खलील, अमीर सैय्यिद दाऊद, शाह रफीअ सब्ज़ पोश, मीर रफीउज़्ज़मान, शैख सालिम, सक्रा, सैय्यिद शाह मीर, मीराँ आरिफ़ हुसैनी, शैख अब्दुल्लाह खटवासन, शैख अब्दुल्लाह बुखारी, शैख अब्दुलहकीम, ख्वाजा अब्दुर्रऊफ़, शाह अब्दुल लतीफ़ बरी, शैख अबदी, शैख फ़तहुल्लाह, शाह फ़तह अली, शैख कमाल, शैख कमालुद्दीन हुसैन, शाह मुजाहिदुद्दीन, शैख मुहिबुल्लाह, सैय्यिद मुहम्मद बुखारी, शैख मुहम्मद ज़ाहिद, शैख मुहम्मद आरिफ़, मौलाना मुहम्मद आरिफ़, शैख महमूद, सैय्यिद मुर्शिदुद्दीन, शैख नाज़िर, शैख नसीरुद्दीन अंसारी, शाह नूरुज़्ज़मान, शैख वली मुहम्मद नारनौली, शाह हरे भरे, शैख यूसुफ़ लंक, शैख यूसुफ़ अंसारी, शाह अज़मतुल्लाह, शेर अली शाह, नन्हे मियाँ रहमतुल्लाह अलैहिम वगैरा ।

आरिफ़ा और सालिहा औरतों में से बीबी जीवनी, चांद बीबी, बीबी खाकी शाह, बीबी कुतुबन, बीबी नबफ़शा, बेगम सुल्तान रहमतुल्लाह अलैहिन्ना मौजूद हैं ।

आगरा शहर का आबाद होना

आगरा अगर्चे बहुत पुराना शहर है मगर इस्लामी ज़माने और सुल्तान सिकन्दर लोदी के ज़माने से पहले येह एक गुमनाम जगह से ज़्यादा वुक्रअत नहीं रखता था, 907 हिज्री बमुताबिक़ 1501 ईस्वी में सिकन्दर लोदी ने इस को नये सिरे से आबाद कर के अपना दारुल खिलाफ़त मुक्रर किया, इस बादशाह की दरवेश परस्ती, इल्मी क़दरदानी और कमाल पर्वरी की बरकत से चंद ही रोज़ में येह नौ आबाद शहर मशाइख़ीने नामदार का मर्कज़ और शीराज़ व बग़दाद की तरह दारुल उलूम बन गया और सुल्तान की नेक नीय्यती, खुदा दोस्ती, कमाल पर्वरी

बहुत से अहले दिल बुज़ुर्गों और अहले कमाल आदमियों को दूर दराज़ इस्लामी मुल्कों से आगरा में खींच लाई और यहां की सुकूनत का बाइस हुई।

सुल्तान सिकन्दर लोदी के ज़माने में औलिया की आमद

चुनांचे शैख यूसुफ़ लंक, सैय्यिद रफ़ीउद्दीन मुहद्दिस, सैय्यिद अब्दुल्लाह दानिशमंद, शैख यूसुफ़ अंसारी, शाह नेअमतुल्लाह चिश्ती, शैख बुढन शत्तारी, शैख चंदन कुरैशी, शैख नसीरुद्दीन तमीमी अंसारी, शैख अबुल फ़तह मक्की, शैख अबू बक्र कुरैशी, सैय्यिद इस्माईल क़ादरी, शैख अब्दुल मोमिन चिश्ती, शैख हसन शीराज़ी, क़ारी अब्दुल मलिक, शैख महमूद, सैय्यिद जाफ़र मुहद्दिस रहमतुल्लाह अलैहिम वगैरा बुज़ुर्गाने अकबराबाद सुल्तान सिकन्दर लोदी के अहद यानी ज़माने में आगरा में रौनक अफ़रोज़ हो कर आबाद हुए।

उनके बाद मुफ़्ती अबुल फ़तह, मुफ़्ती बहाउद्दीन, सैय्यिद जलाल मुतावक्किल, शैख जलाल अंसारी, सैय्यिद अलाउद्दीन मज्ज़ूब, हाजी इब्राहीम मुहद्दिस, शैख मुबारक, शैख ज़ैनुद्दीन, शैख शहाबुद्दीन मुअम्माई, मौलाना अबुल वाजिद फ़ारंगी वगैरा बाबरी, हुमायूनी अहद यानी ज़माने में आगरा तशरीफ़ लाए।

दसवीं सदी हिज़्री के औलियाए आगरा

दसवीं सदी हिज़्री के अख़ीर तक जो अहदे अकबरी का आख़िरी ज़माना था, आगरा में उलमा फुज़ला और मशाईख़ीन का ख़ूब दौर दौरा रहा और हाजी इब्राहीम मुहद्दिस, सैय्यिद बदरुद्दीन, क़ाज़ी जलालुद्दीन, क़ाज़ी नूरुल्लाह शोस्तरी, ख़्वाजा मुहम्मद यहया, शैख मुनव्वर चिश्ती, शैख आरिफ़ हुसैनी, शैख अब्दुल वहहाब, मौलाना कमालुद्दीन हुसैन,

शैख ज़ियाउल्लाह शत्तारी, क़ारी शैख मुहम्मद ख़ालिदी, मौलाना मीर कलां, मौलाना मीर, क़ाज़ी नासिर, शैख अब्दुर्रहमान क़ादरी, अल्लामा अबुल फ़ज़ल, शैख अबुल फ़ैज़ फ़ैज़ी, शैख अब्दुल्लाह शत्तारी, शैख अबुल ख़ैर रहमतुल्लाह अलैहिम वग़ैरा उलमा फुज़ला और ख़ुदा शनास आगरा में तशरीफ़ लाए या पैदा हुए।

ग्यारहवीं सदी हिज़्री के औलियाए आगरा

ग्यारहवीं सदी में जो कि जहांगीर और शाहजहाँ और आलमगीर का अहदे सलतनत है, ब निस्बत दसवीं सदी के तनज़्जुली के आसार नुमायां होने लगे मगर फिर भी बाज़ मशाईखीन के तुफ़ैल हरा भरा रहा चुनांचे हज़रत शाह अबुल उला, मीर मुहम्मद नोअमान, सैय्यिद अहमद बुख़ारी, सैय्यिद जलाल बुख़ारी, सैय्यिद बाक़ी, शैख इस्माईल चिश्ती, अल्लामा अफ़ज़ल ख़ां, मीर अब्दुल्लाह तबरेज़ी, सैय्यिद अब्दुल क़ादिर बुख़ारी, अमीर फ़ैज़ुल उला, शैख मुहम्मदी, शैख मुहम्मद सालेह, शैख नाज़िर, मुल्ला अब्दुल अज़ीज़, मुल्ला अब्दुर्रशीद रहमतुल्लाह अलैहिम वग़ैरा बड़े बड़े मशहूर औलिया अल्लाह और उलमा, फुज़ला इस सदी में भी पैदा हुए।

बारहवीं सदी हिज़्री के औलियाए आगरा

बारहवीं सदी में इस्लामी सलतनत के तनज़्जुल के साथ आगरा के मशहूर औलिया में भी हैरत अंगेज़ तनज़्जुल पैदा हुआ, अय्यामे तवाइफ़ुल मुलूकी और जाटों और मराठों के ज़माने के तमाम शुरफ़ा और मशाईखीन आगरा से रुख़स्त हो गए, जिस का येह नतीजा है कि तक्ररीबन पूरी सदी में सिफ़र ही सिफ़र नज़र आता है, उस ज़माने से अंग्रेज़ों के ज़माने तक ऐसा तारीक़ यानी अंधेरा ज़माना गुज़रा कि बड़े बड़े औलिया

अल्लाह और मशाईखीन की खानकाहें, दरगाहें और मज़ारात तक खुद खुदा कर खत्म हो गए या कसमपुर्सी की वजह से बेनाम व लापता हो गए, किस क्रद्र अफ़सोस की बात है कि पुराने बुज़ुर्गाने दीन रहमतुल्लाह अलैहिम के मज़ारात में सिर्फ़ दो एक मज़ार मशहूर और चंद मज़ारात का निहायत तलाशो तहक़ीक़ात से पता चला है, शाह अब्दुल्लाह शत्तारी, शैख़ ज़ियाउल्लाह शत्तारी, मौलाना मीर कलां, शैख़ इस्माईल चिश्ती, हाजी इब्राहीम मुहद्दिस, अमीर सैय्यिद जलाल मुतावक्किल, सैय्यिद बदरुद्दीन रहमतुल्लाह अलैहिम वग़ैरा में से औलियाए क़िबार यानी बड़े औलियाए क़िराम के मज़ारात तक का पता व निशान नहीं मिलता, चंद बा फ़ैज़ व नूरानी मज़ारात मौजूद हैं, उन के मकीनों का नाम बताने वाला दुनिया में कोई नहीं मिलता।

अफ़सोस कि शैख़ मुबारक, शैख़ फ़ैज़ी, शैख़ अबुल ख़ैर वग़ैरा में से मशाहीर के मक़ाबिर नेस्तो नाबूद कर दिए गए और किसी को गवमैँट को मुतावज्जेह करना क्या मा'ना उफ़ तक करने की तौफ़ीक़ ना हुई।

जिनके नक्शे पा को रखती थी ज़मीं सर पर ब फख़
तुर्बुतों में खाक आलूदा हैं वो आली गुहर
नाम उनका कोई अब भूले से भी लेता नहीं
जिनके दरवाज़ों पे डंका बजता था शामो सहर
खाक में मर कर मिले अफ़सोस वो आली दिमाग़
अब निशाने क़ब्र भी उनके नहीं आते नज़र

सैंकड़ों मज़ारात आबादी में आ कर लापता हो गए यानी आबादी बढ़ने की वजह से मज़ारात खत्म कर दिये गये, पुराने बुज़ुर्गाने दीन की खानकाहें अक्सर लबे जमुना यानी जमुना नदी के किनारे थीं, मुग़लिया अहदे सल्तनत यानी ज़माने में वहां अमीर लोगों ने बड़ी बड़ी आलीशान

हवेलियाँ और बागात तामीर कराये, कुछ आसार यानी निशानियाँ उस ज़माने में नेस्तो नाबूद हो गए, अब उस मक़ाम यानी जगह पर गैर मुस्लिमों का मुहल्ला बेलन गंज आबाद है, जिस में ग़ालिबन एक घर भी मुसलमान का नहीं है, मुग़लिया ज़माने के अमीर लोगों की बड़ी बड़ी हवेलियों में गैर मुस्लिम साहूकार आबाद हैं, इस से आगे बढ़ कर जान साहिब मशहूर सौदागर के वसीअ कारख़ाने (फ़्लोर मिलज़, कॉटन मिलज़, बर्फ़ कारख़ाना वग़ैरा) और पानी पहुंचाने के कारख़ाने वग़ैरा बन गए हैं, दो एक मज़ार जान साहिब के कारख़ानों के अंदर अब तक मौजूद हैं, मगर साहिबे मज़ारात के नामो निशान का कुछ पता नहीं चलता, अब इस नवाह यानी अतराफ़ में हज़रत मीर रफ़ीउद्दीन मुहद्दिस और शाह फ़ख़्रुद्दीन मदारी रहमतुल्लाह अलैहिमा के दो पुराने मज़ारात मशहूरों मारुफ़ बाक़ी रह गए हैं।

तेरहवीं और चौदहवीं सदी हिज़्री के औलियाए आगरा

बारहवीं सदी हिज़्री की तारीकी के बाद तेरहवीं और चौदहवीं सदी हिज़्री के बुज़ुर्गाने दीन नेमते ग़ैर मुतरक्क़बा मालूम होते हैं, मौलाना ज़ियाउद्दीन बलख़ी, मौलाना अहमदी क़ादरी, मौलाना आदिल, सैय्यिद अमजद अली शाह क़ादरी, शाह मुहम्मद चिश्ती, हकीम सैय्यिद नूरुद्दीन, हकीम सैय्यिद महेर अली, शाह बेदार बख़्त, हाफ़िज़ अब्दुल्लाह, मियां नज़ीर, शैख़ इमाम अली शाह, सल्लू शाह मज्ज़ूब, मिर्ज़ा अली शाह मज्ज़ूब, बब्बू शाह मज्ज़ूब, मौलवी सैय्यिद वारिस अली, हम्द शाह व मुहब्बत शाह नक़््शबंदी रहमतुल्लाह अलैहिम।

आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत

अल्लामा सईद अहमद मारहरवी ने “बोस्ताने अख्यार” नाम की किताब 116 साल पहले लिखी थी जिस को नई तरतीब और तस्हील के साथ मौलाना अबू शफीअ मुहम्मद शफीक खान अत्तारी मदनी फतेहपुरी साहिब ने नया नाम “आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत” दे कर पेश किया है।

येह किताब महेज़ एक तस्नीफ़ नहीं बल्कि आगरा की रुहानी तारीख़ का ज़िंदा दस्तावेज़ है। आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत में वो पाकीज़ा हस्तियाँ जमा की गई हैं जिनकी बरकतों से आगरा की सर ज़मीन सदियों से मुनव्वर चली आ रही है।

आगरा की सर ज़मीन वो सर ज़मीन है जिसको सैकड़ों साल हिन्दुस्तान की राजधानी बनने का ऐज़ाज़ हासिल है। आपको जान कर खुशी होगी कि आगरा की सर ज़मीन में :

🕌 अल्लामा इब्ने हजर अस्कलानी रहमतुल्लाह अलैह के पोते शागिर्द

🕌 अल्लामा सखावी रहमतुल्लाह अलैह के शागिर्द

🕌 अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती रहमतुल्लाह अलैह के शागिर्द

🕌 हज़रत बाक़ी बिल्लाह रहमतुल्लाह अलैह के खलीफ़ा

🕌 मुजद्दिदे अल्फ़े सानी रहमतुल्लाह अलैह के खलीफ़ा

🕌 मुहम्मद ग़ौस ग्वालियरी रहमतुल्लाह अलैह के बेटे

🕌 हज़रत इम्दादुल्लाह मुहाजिर मक्की रहमतुल्लाह अलैह के खलीफ़ा

🕌 अब्दुल क़ादिर बदायूनी रहमतुल्लाह अलैह के असातिज़ा

🕌 हज़रत अब्दुर्हीम मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाह अलैह के असातिज़ा

🕌 आला हज़रत रहमतुल्लाह अलैह के पीर साहिब सैय्यिद आले रसूल मरहरवी रहमतुल्लाह अलैह के असातिज़ा

🕌 हज़रत शाहे आलम रहमतुल्लाह अलैह, कुतुबे आलम रहमतुल्लाह अलैह के औलाद

🕌 मीर सैय्यिद शरीफ़ जुरजानी रहमतुल्लाह अलैह की औलाद इनके इलावा और बहुत बुलंद पाया औलियाए किराम के मज़ारात मौजूद और उनकी सीरत इस किताब में महफ़ूज़ है।

इस किताब की सबसे बड़ी खूबी येह है कि 283 औलियाए किराम का जामेअ तज़िकरा मुस्तनद तारीखी हवालों के साथ आम फहेम मगर इल्मी और वक्रार भरे उस्लूब में पेश किया गया है, जिसे पढ़ने वाला खुद को आगरा की गलियों, खानकाहों और मज़ारात की रुहानी फ़िज़ा में महसूस करेगा।

येह किताब मुस्लमानों के लिए बाइसे फ़ख़र, तलबा और मुहक्किक्कीन के लिए क़ीमती सरमाया, और हर आशिक़े औलिया के लिए लाज़िमी मुताला है।

अगर आप चाहते हैं कि आपकी नस्लें अपने औलिया को पहचानें, घरों में दीनी व रुहानी माहौल क़ाईम हो और एक नायाब तारीखी किताब आपके घर की ज़ीनत बने तो आज ही इस किताब को हासिल करें। यक्कीन मानिए जो एक बार पढ़ेगा, वो दूसरों को भी पढ़ने पर मजबूर कर देगा।

📖 **सदकए जारिया का बेहतरीन मौका** 📖

ऐ आशिकाने औलिया ! आइए! अक्राबिर व औलियाए किराम की मुकद्दस ज़िंदगी को आम करें और अपनी आखिरत सँवारें।

📖 किताब: बोस्ताने अख्यार

🏠 मौजू: आगरा के 283 बुजुर्गों व औलियाए किराम की पाक सीरत

📖 इल्म, अमल और रूहानियत से भरपूर एक अन्मोल किताब इस किताब को मस्जिदों में, मदरसों में, दरगाहों पर, गरीब मुसलमान और दीनी तलबा में इसाले सवाब के लिए तक्रसीम करवा कर हमेशा का सवाब हासिल करें।

💰 तक्रसीम रेट:

◆ 1 किताब — ₹350

◆ 5 किताब — ₹1750

◆ 10 किताब — ₹3500

✨ जो इल्म फैलाता है, वो सदियों तक ज़िंदा रहता है।

✨ बुजुर्गों की सीरत आम करना, ईमान की ताज़गी है।

👉 आज ही ऑर्डर देकर इस नेक काम में शरीक बनें।

👉 आपके नामए अमल में हमेशा सवाब जुड़ता रहेगा।

नियत करें — इल्म बाँटें — सवाब कमाएँ।

असल कीमत **700 रुपये** रिआयती कीमत **350 रुपये**

आर्डर बुक करवाने के लिए इस नंबर राबिता कीजिए

राबिता नंबर : +91 8808693818

मकतबा दारुस्सुन्ना, F 1 mewati नगला, ताजनगरी 2, आगरा

आगरा के गौस शाह मुबारक गौस और 8 औलियाए किराम की प्यारी सीरत ढोली खार दरवाजा (बिजली घर चौराहा)

(1) शैख मुबारक मज्जबूब

आप रहमतुल्लाह अलैह सादात किबार और मज्जबूबाने साहिबे हाल से हैं, गौसियत के मर्तबा पर सरफ़राज़ और शाह मुबारक गौस के नाम से मशहूर हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह की हालत दिल फ़रेब और सोहबत खुशगुवार थी, इब्तिदा में ग्वालियर में रौनक अफ़रोज़ थे, 978 हिजरी में आगरा तशरीफ़ लाए और ढोली खार दरवाजा पर जहां अब आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** वाक़ेअ है ख़सपोश मकान के अंदर मुदत तक जिगर गुदाजी के साथ बसर की।

विसाल फरमाने के बाद आप रहमतुल्लाह अलैह के मोअतक्रिदीन ने मज़ार पर एक ख़शती इमारत बनवा दी थी, **मज़ार मुबारक** पक्की सड़क के किनारे मुत्तसिल लाल क़िला और आगरा फोर्ट रेलवे स्टेशन वाक़ेअ है, जिस पर अब कोई इमारत नहीं, सिर्फ़ तीन दर की एक मस्जिद मौजूद है ग़दर यानी 1857 ईस्वी की जंगे आज़ादी से पहले इस जगह एक ग़न्जान मुहल्ला और बाज़ार आबाद था जो सब मुन्हदिम करा दिया गया, अब सिवाए मस्जिद और मज़ार और एक छोटे से मकान के और कोई घर नहीं रहा।

1857 ईस्वी की ग़दर यानी जंगे आज़ादी से पहले मिस्टर कनीस कलैक्टर ने जब मज़ार के क़रीब पक्की सड़क निकालनी चाही तो हकीम

नूरुद्दीन साहिब ने मुफ़्ती मुहम्मद असदुल्लाह खां की मारिफ़त कलैक्टर से कहला भेजा कि जो सड़क बनाने के लिए निशानी लगाई गई है उस में येह मज़ार सड़क में आता है, बराहे मेहरबानी यहां सड़क बनवाना मौक़ूफ़ रखिए वर्ना आपके हक़ में अच्छा ना होगा। कलैक्टर ने येह पैग़ाम सुनकर सड़क बनवाने का काम रोक दिया। और 1857 की ग़दर यानी जंगे आज़ादी के बाद सड़क निकाली गई मगर मज़ार मुबारक महफ़ूज़ रखा गया। (बोस्ताने अख्यार, पेज147)

मौजूदा हालत 2025

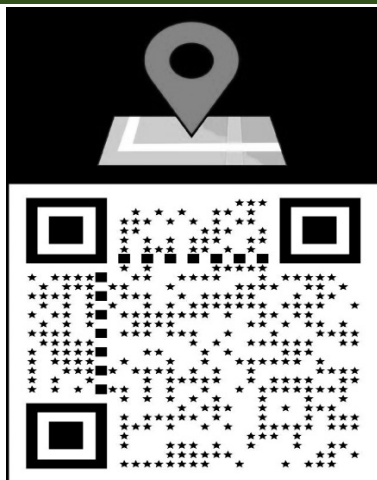
हज़रत शैख़ मुबारक ग़ौस रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक बिजली घर चौराहे से आगरा फोर्ट स्टेशन की जानिब जाते हुए रास्ते में रोड के किनारे उल्टे हाथ पर मौजूद है।

आशिक़ाने औलिया ने अब मज़ार मुबारक के चारों तरफ़ दीवार, स्टील की जालियाँ और ऊपर एक ख़ूबसूरत गुंबद बनवा दिया है जिस पर हरा रंग हो रहा है।

मज़ार मुबारक की देख भाल करने वाले बाबा जलाल ने बताया कि अब से कुछ दिन बाद मज़ार मुबारक के इर्द गिर्द मार्बल की जाली भी लगेगी। जिससे मज़ार की ख़ूबसूरती में चार चांद लग जाएंगे।

ज़िलक़ादा की 1,2,3 तारीख़ को बड़ी अक़्रीदत के साथ आप रहमतुल्लाह अलैह का उर्स मनाया जाता है। मज़ार से क़िब्ला की जानिब छोटी सी एक मस्जिद बनी है। आप रहमतुल्लाह अलैह के पायँती एक क़ब्र बनी हुई है पूछने पर पता चला कि येह क़ब्र आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार के ख़ादिम की है।

शैख मुबारक मज्ज़ूब रहमतुल्लाह
अलैह के मज़ार की **Location** का
QR Code इस को अपने
मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप
के मोबाइल पर **Location** खुल
जाएगी, जिस की मदद से आसानी
के साथ आप मज़ार मुबारक तक
पहुँच सकते हैं।



हथिया पोल (दरवाज़ा, बिजली घर चौराहा)

(2) ज़ंगी शहीद

आप रहमतुल्लाह अलैह आगरा के पुराने शहीदों में से हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक आगरा क़िला के दोनों फ़सीलों के बीच में हथिया पोल (दरवाज़ा) से मिला हुआ ज़ियारत गाह खासो आम है।

(बोस्ताने अख्यार, पेज 82.83)

मौजूदा हालत 2025

हज़रत ज़ंगी शहीद रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर जाने का रास्ता येह है कि बिजली घर चौराहे के आटो स्टैंड से अंबेडकर पार्क के गेट से अंदर जाकर क़िला के हथिया पोल दरवाज़े के पास जाएं, दरवाज़े के पास जहां फ़ौजी मौजूद होते हैं वहां से उल्टे हाथ की तरफ़ मुड़ कर सीढ़ियों से चढ़ जाएं, फिर आगे जा कर सीढ़ियों से नीचे उतर जाएं। एक आसान और क़रीब का रास्ता और है और वो येह कि आगरा फोर्ट स्टेशन

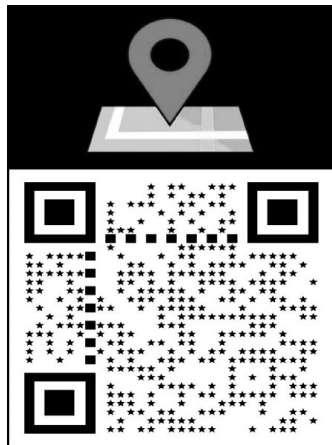
के गेट से पहले पतला सा रास्ता अंबेडकर पार्क से होता हुआ हथिया पोल दरवाजे के लिए गया है।

मज़ार के आस पास बंदर काफ़ी हैं लिहाज़ा जब भी जाएं तीन चार लोग एक साथ जाएं वर्ना बंदर परेशान करेंगे।

मज़ार मुबारक का फ़र्श सफ़ैद मार्बल का और मज़ार के इर्द ग़र्द मार्बल की जाली लगी हुई है और मज़ार के चारों तरफ़ लोहे के तार की जाली है और ऊपर लोहे के पतरे का टीन शैड लगा हुआ है। मज़ार मुबारक के सिरहाने एक नीम का दरख़्त है जो मज़ार पर साया किए हुए है।

आप रहमतुल्लाह अलैह का उर्स 2 रमज़ानुल मुबारक को होता है लेकिन आशिक़ाने औलिया हर जुमेरात को हाज़िर हो कर आप रहमतुल्लाह अलैह की बरकतों से हिस्सा पाते और फ़ातिहा व नियाज़ करते हैं।

ज़ंगी शहीद रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



जामा मस्जिद (आगरा)

(3) ग़रीब शाह

आप रहमतुल्लाह अलैह आगरा के पुराने बुजुर्गों में से हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह के तारीख़ी हालत हमारी ला इल्मी के पर्दे में पोशीदा हैं, मज़ार

मुबारक जामा मस्जिद के सेहन के नीचे वाक्रेअ और ताबूत नुमा बना हुआ है, जिलक़ादा के महीने में आप रहमतुल्लाह अलैह का उर्स होता है।

(बोस्ताने अख्यार, पेज 131)

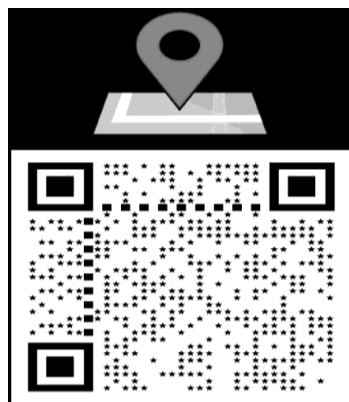
मौजूदा हालत 2025

हज़रत ग़रीब शाह रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर जाने का रास्ता येह है कि जामा मस्जिद के बुलंद दरवाज़े (मैन दरवाज़ा) जो आगरा फोर्ट स्टेशन के सामने है पर चढ़ कर सीधे हाथ की जानिब मुड़ जाएं और नीचे उतर कर अंदर जाएं अंदर मज़ार तक पहुँचने के लिए झुक कर जाना पड़ता है। मज़ार मुबारक पर कोई तख्ती वगैरा नहीं लगी है। मज़ार के चारों तरफ़ स्टील की रेलिंग और ऊपर खूबसूरत गुंबद बना हुआ है।

आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार चूँकि जामा मस्जिद के सेहन के नीचे है इसलिए जामा मस्जिद के सेहन में मज़ार की निशानी के तौर पर चारों तरफ़ पत्थर लगा हुआ है जिस पर हरा रंग है ताकि कोई मज़ार की बे अदबी ना करे।

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक को देख कर ऐसा मालूम होता है कि पहले उस जगह आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक था फिर उसके बाद जामा मस्जिद बनी है।

ग़रीब शाह रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



घाटी मामूं भांजा

(4) शैख अबुल फ़तह मक्की

शैख अबुल फ़तह रहमतुल्लाह अलैह की पैदाइश 'शरवान' शहर की है चूँकि आप रहमतुल्लाह अलैह मक्कए मुअज़्जमा में बहुत रहे थे इसी वजह से मक्की मशहूर हो गए, शैख जमालुद्दीन इब्ने अब्दुल बासित अब्बासी के फ़र्जद यानी बेटे हैं, सिल्सिलए इरशाद शैख उमर इब्ने कारिज़ तक पहुंचता है, हज़रत ग़ौसुल इफ़ा ग़ीलानी रहमतुल्लाह अलैह का खास ख़िरका आप रहमतुल्लाह अलैह को पहुंचा था वो हमेशा अपने साथ रखा करते थे, हर एक किस्म के फ़ज़ाइलो कमालात से मौसूफ़ और सय्याही के शौक़ीन थे, सुल्तान सिकन्दर लोदी के ज़माने में ख़ुशकी के रास्ते सिंध में तशरीफ़ लाए।

बादशाह ने आप रहमतुल्लाह अलैह के औसाफ़ो कमालात का हाल सुन कर एक अरीज़ा आप रहमतुल्लाह अलैह की तलब में भेजा जिसमें तरह तरह की ख़ुशामदें और आरज़ूएँ दर्ज की थीं, इस अरीज़ा को मुलाहज़ा कर के आप रहमतुल्लाह अलैह आगरा में तशरीफ़ लाए, सुल्तान निहायत आजिज़ी और मुहब्बत के साथ पेश आया और मिन्नत समाजत कर के आप रहमतुल्लाह अलैह को आगरा के क्रियाम पर राज़ी कर लिया और इस क़द्र ख़ातिरो वुक्क़अत की कि उमराए दौलत को रश्क पैदा हुआ चुनांचे एक बद बातिन ने आप रहमतुल्लाह अलैह के हुरूफ़ का चर्बा उतार कर एक ख़त सुल्तान के दुश्मन के नाम बना कर इस तरह ख़ाना किया कि बादशाह के पास पहुंच गया, बादशाह ने वो ख़त आप रहमतुल्लाह अलैह के पास भेज दिया, आप रहमतुल्लाह अलैह ने कहला भेजा कि अबुल फ़तह ऐसा नालाइक़ नहीँ कि ऐसी बेहूदा तहरीर से अपने क़लम को मुलव्वस कर के दिल

आजारी रवा रखे। इन्शा अल्लाह तोहमत लगाने वाला शख्स जल्द अपने किए की सजा पाएगा। एक हफ्ता भी पूरा ना गुजरने पाया कि एक मस्त ऊंट ने उस शख्स का हाथ चबा डाला।

जब सुल्तान इब्राहीम लोदी बाबर के मुक़ाबले के वास्ते लश्कर के साथ पानीपत की तरफ़ रवाना हुआ तो दीगर उलमा और मशाईखीन के साथ आप रहमतुल्लाह अलैह को भी हमराह यानी साथ ले गया। दिल्ली से आप रहमतुल्लाह अलैह लश्कर से लौट आये, जब लोगों ने हक़ीक़ते हाल पूछा तो फ़रमाया कि ख़ुदा की आफ़त और अज़ली आशूब इस लश्कर के ऊपर नामज़द हुआ है लिहाज़ा भागना वाजिब है, गर्ज़ कि आप रहमतुल्लाह अलैह आगरा चले आए और सुल्तान इब्राहीम और उस की फ़ौज के इलावा बेशुमार मख़्लूक़ात इस लड़ाई में जाए हुई।

सुल्तान इब्राहीम लोदी के बाद के सलातीन भी आप रहमतुल्लाह अलैह की इज़्जतो वुक्क़अत करते रहे, सबसे ज़्यादा शेर शाह सूरी आप रहमतुल्लाह अलैह का मोअतक्रिद था

पुरनमल वालिए रायसेन जिसने चंदेरी को ग़ारत कर के हज़ारहा मुसलमान शुरफ़ा को तबाहो बर्बाद और दो हज़ार मुसलमान औरतों को अपने हरम में दाख़िल कर लिया था 950 हिजरी में आप रहमतुल्लाह अलैह ही के फ़तवे से उस को हाथियों के पांव के नीचे कुचलवा दिया गया।

चुनांचे 134 बरस आप रहमतुल्लाह अलैह ने तालिबाने ख़ुदा की रहनुमाई की और बा इख़्तिलाते रिवायात 22 शाबान या 2 ज़िलहिज्जा 953 हिजरी को आप रहमतुल्लाह अलैह खाके आगरा के सिपुर्द किए गए, मीर रफ़ीउद्दीन सफ़वी मुहद्दिस अकबराबादी रहमतुल्लाह अलैह ने आप रहमतुल्लाह अलैह के जनाज़ा की नमाज़ पढ़ाई।

अब **मज़ार मुबारक** का पता नहीं, क्या अजब कि आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार वही हो जो घाटी मामूं भांजा में शोहदे की मस्जिद और मदरसा कस्साबान के करीब हाजी मक्की या हाजी मकई के नाम से मशहूर है। (बोस्ताने अख्यार, पेज 31.33)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक को काफी तलाश किया मगर ना मिल सका, इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडिशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

बालूगंज (पीली कोठी, खोया मंडी के पास)

(5) मुल्ला वली मुहम्मद अबुल उलाई

आप रहमतुल्लाह अलैह इल्मो फ़ज़ल से मौसूफ़ और सैय्यिद शाह अमीर अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह के खुल्फ़ाए आ'ज़म (यानी बड़े खलिफ़ाओं में से) और याराने जानिसार से थे, जो निस्बत शैख़ नसीरुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह को हज़रत महबूबे इलाही निज़ामुद्दीन औलिया रहमतुल्लाह अलैह के खलिफ़ाओं में थी वही निस्बत आप रहमतुल्लाह अलैह को सैय्यिद अमीर अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह के खलिफ़ाओं में हासिल थी।

आलिमे बा अमल, आरिफ़, आशिक़ और उलूम में अहले ज़माना के उस्ताद थे, खलीफ़ा अबुल कासिम अकबराबादी रहमतुल्लाह अलैह को आप की शागिर्दी और मुरीदी का फख़्र हासिल था, आप रहमतुल्लाह अलैह

का मज़ार मुबारक पक्की सड़क के किनारे मुत्तसिल आबादी मुहल्ला बालूगंज वाक़ेअ है। (बोस्ताने अख्यार, पेज 248)

मौजूदा हालत 2025

हज़रत मुल्ला वली मुहम्मद अबू उलाई रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर जाने का रास्ता येह है कि चील गढ़ चौराहे से बालूगंज पेट्रोल पंप की तरफ़ जाते हुए सीधे हाथ पर पीली कोठी और खोया मंडी के बीच में बिल्कुल रोड के किनारे मौजूद है। मज़ार मुबारक पर एक गूलर का दरख़्त है जो मज़ार पर साया किए हुए है।

मज़ार मुबारक पर लगी हुई तख़्ती में येह इबारात लिखी हुई है:

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

हज़रत मुल्ला वली मुहम्मद साहिब अबू उलाई रहमतुल्लाह अलैह
खलीफ़ा अबूल कासिम अकबराबादी रहमतुल्लाह अलैह को आप
रहमतुल्लाह अलैह की शागिर्दी और मुरीदी का फ़ख़र हासिल था। आप
रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक पक्की सड़क के किनारे मुत्तसिल
आबादी मुहल्ला बालूगंज वाक़ेअ है।

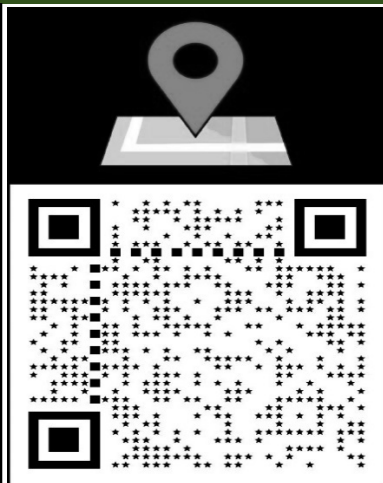
आपका सिन्ने वफ़ात 1099 हिजरी है।

वलीयुल्लाह के मर्क़द से अब तक फ़ैज़ जारी है

ख़ुदा पर मिटने वालों की निशानी देखते जाओ

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक के इहाते में सफ़ैद पत्थर के टुकड़ों का फ़र्श और मज़ार मुबारक के इर्द गिर्द लोहे के तार का जाल और ऊपर लोहे के टीन का शैड लगा हुआ है।

मुल्ला वली मुहम्मद अबुल
उलाई रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की
Location का **QR Code** इस
को अपने मोबाइल से **Scan**
कीजिए, आप के मोबाइल पर
Location खुल जाएगी, जिस की
मदद से आसानी के साथ आप
मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



परताब पुरा (बालूगंज)

(6) मीर मुहम्मद जान नक्रशबंदी मुजद्दीदी

आप रहमतुल्लाह अलैह शैख अब्दुल हैय्य शादमानी रहमतुल्लाह अलैह के खलीफा हैं और शैख अब्दुल हैय्य शादमानी रहमतुल्लाह अलैह हज़रत शैख अहमद मुजद्दीद अल्फे सानी रहमतुल्लाह अलैह के खलीफ़ा नामदार हैं।

आप रहमतुल्लाह अलैह अकबराबाद के नामवर मशाईखीने नक्रशबंदिया में से हैं, बड़े आरिफ़ कामिल और निहायत अज़ीज़ुल वुजूद बुज़ुर्ग थे, आलमगीर बादशाह के ज़माने में 1099 हिज़्री ब मुताबिक़ 1687 ईस्वी में आप रहमतुल्लाह अलैह वासिल बहक हुए यानी आप रहमतुल्लाह अलैह का विसाल हो गया।

आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक पक्की सड़क के किनारे परताब पुरा बालूगंज मुत्तसिल वालनेटर क्लब वाक़ेअ है, मज़ार पर एक

गुंबद बना हुआ है जो चार सुतूनों यानी पिलरों पर क्राइम है, शैख अताउल्लाह रहमतुल्लाह अलैह आप रहमतुल्लाह अलैह के मशहूर खुलफ़ा में से है।

(बोस्ताने अख्यार, पेज 169.170)

मौजूदा हालत 2025

हज़रत मीर मुहम्मद जान नक्रशबंदी मुजद्दिदी रहमतुल्लाह अलैह मुजद्दिद अल्फ़े सानी रहमतुल्लाह अलैह के ख़लीफ़ा हज़रत शैख़ अब्दुल हैय्य शादमानी रहमतुल्लाह अलैह के ख़लीफ़ा हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक बालूगंज पेट्रोल पंप चौराहे से प्रताप पुरा की तरफ़ जाते हुए सैंट मरी चर्च के गेट से पहले रोड के किनारे सीधे हाथ पर मौजूद है। आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार के बग़ल में और तीन क़ब्रें बनी हुई हैं जिनका नाम वग़ैरा मालूम ना हो सका।

आज भी आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार पर एक गुंबद बना हुआ है जो चार सुतूनों पर क्राइम है। रोड के किनारे एक गेट लगा हुआ है जिस पर 'सैय्यिद मुहम्मद मीर जान कादरी नक्रशबंदी' लिखा हुआ है।

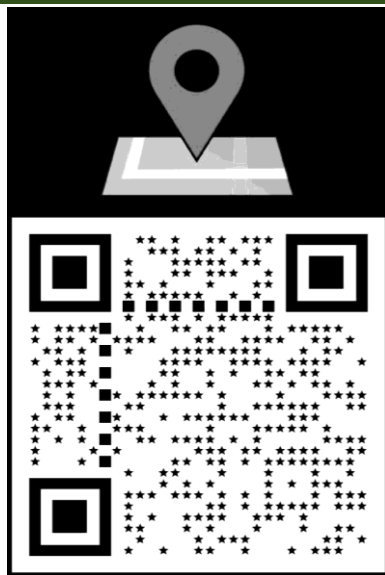
आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक की तरख़्ती पर येह इबारत लिखी हुई है:

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

الان اولياء الله لا خوف عليهم ولا هم يحزنون

हज़रत शैख़ुल मशाईख़ हज़रत मीर जान नक्रशबंदी मुजद्दिदी तारीख़े वफ़ात 5 शव्वाल 1099 हिजरी, 1687 ईस्वी वासिल ब हक हुए।

मीर मुहम्मद जान नक़्शबन्दी
मुजद्दी रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार
की **Location** का **QR Code**
इस को अपने मोबाइल से **Scan**
कीजिए, आप के मोबाइल पर
Location खुल जाएगी, जिस
की मदद से आसानी के साथ
आप मज़ार मुबारक तक पहुँच
सकते हैं।



थाना रकाबगंज

(7) अब्दुल्लाह

आप रहमतुल्लाह अलैह के अस्ली नाम का पता नहीं चल सका, मज़ार मुबारक अंदर, आबादी मुहल्ला रकाबगंज मस्जिद मुत्तसिल नबक बंगाल से जुनूबी जानिब थोड़े फ़ासिले पर वाक़ेअ है, जिससे बुजुर्गी के आसार नुमायां हैं, क़ुरबो ज़वार के लोग आप रहमतुल्लाह अलैह की बेहद करामात बयान करते हैं। (बोस्ताने अख्यार, पेज 103.104)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक को काफी तलाश किया मगर ना मिल सका, इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस मोबाइल नंबर (8808693818) पर कॉल कर के

ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

(8) शैख अब्दुर्रहमान सूफ़ी क़ादरी सरहिंदी

आप रहमतुल्लाह अलैह बुलंद हिम्मत, सितूदा सिफ़ात, गोशा नशीन, भूके रहने वाले, दुनिया से बेनियाज़, क़नाअत दोस्त और अहले कश्फ़ बुजुर्ग थे, आप रहमतुल्लाह अलैह को सैय्यिद बूढ़ा बिलग्रामी रहमतुल्लाह अलैह की खिदमत में इरादत थी।

सरहिंद से आगरा में रौनक अफ़रोज़ हो कर शैख ज़ियाउल्लाह शत्तारी रहमतुल्लाह अलैह की ख़ानक़ाह के एक हुजरे में सुकूनत इख्तियार फ़रमाई, चंद रोज़ तक ज़ियाई सोहबतों ने ज़िंदगानी का बाग़ पुर बहार कर दिया, यकायक एक हसीनो जमील औरत पर आशिक़ हो गए, माशूक़ा के दिल में भी सच्ची मुहब्बत ने दर्द पैदा कर दिया और उस ख़ातून ने भी दरवेशी पर दिल निसार कर दिया, दोनों तरफ़ की इजाज़त और ख़ुशनूदी से अक़द यानी निकाह की रस्म अदा हुई, बरसों तक दोनों हमराज़ रहे, सैय्यिद अहमद क़ादरी रहमतुल्लाह अलैह से जो आपके हमराज़ थे मन्कूल है कि शैख अब्दुर्रहमान रहमतुल्लाह अलैह उस औरत के साथ ऐसा गहरा मुराक़बा किया करते थे कि रात को सुब्ह कर देते थे।

आप रहमतुल्लाह अलैह निहायत कम दर्जे की ख़ुराक वाले थे, 995 हिज़्री में अपनी उंसुरी सूरत सिपुर्दे ख़ाक़ कर के वतन अस्ली को रुख़स्त हुए यानी आप रहमतुल्लाह अलैह का विसाल हो गया।

मज़ार मुबारक मुत्तसिल थाना रकाबगंज अराज़ी मौसूमा मटिया महल में वाक़ेअ है, रबीउल अब्बल की पंद्रह तारीख़ को आप रहमतुल्लाह अलैह का उर्स होता है। (बोस्ताने अख़्यार, पेज 109.110)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक को काफी तलाश किया मगर ना मिल सका, इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस मोबाइल नंबर (8808693818) पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

हलवाई गली

(9) सैय्यिद हसन शहीद

आप रहमतुल्लाह अलैह ज़ुमरा ए शुहदाए अकबराबाद में से हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार हलवाई गली में ज़ियारत गाह आम और लोकल कमेटी एजंटी के ऐहतिमाम में है। (बोस्ताने अख़्यार, पेज 72)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक को काफी तलाश किया मगर ना मिल सका, इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस मोबाइल नंबर (8808693818) पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

सर ज़मीने आगरा पर औलिया कितने ही हैं

आओ तुम को मैं बताऊं अस्फ़िया कितने ही हैं
सर ज़मीने आगरा पर औलिया कितने ही हैं
जल्बए नूरे ख़ुदा की हर तरफ़ देखी ज़िया
चार सू रौशन चिरागे पुर ज़िया कितने ही हैं
गिनते गिनते थक ना जाएं येह तुम्हारी उंगलियां
जा बजा वो बंदगाने किबरिया कितने ही हैं
ख़ानवादए क़ादरिया से मदारी फ़ैज़ तक
हर तरफ़ जलवा कुनां वो बा सफ़ा कितने ही हैं
कादरी चिशती सुहर्वदी मदारी सिल्सिले
बाग़ ऐसे खिलखिलाते ख़ुशनुमा कितने ही हैं
जाने किस किस दर से मिलती है यहां पर राहतें
रहमतों के दर खुले मरहबा कितने ही हैं
औलिया की महफ़िलों में है सुकू का तज़्किरा
आशिक़ी के दायरे में आशना कितने ही हैं
उनके दर की ख़ाक सर पर मल रहे हैं बादशाह
उनकी महफ़िल में झुके अहले हया कितने ही हैं
जाहो मन्सब छोड़ बैठे उनके दर की ख़ाक पर
फ़ैज़ लेते हैं यहां अहले दुआ कितने ही हैं
एक तू क्या है तेरी औक्रात क्या बेख़ुद रज़ा
उनकी बज़्मे इश्क़ में नग़मा सरा कितने ही हैं
शायर :वसीम बेख़ुद मांडलवी भीलवाड़ा राजस्थान

मुसनिफ़ का तआरुफ़.....	3
मज़ारात पर हाज़िरी का तरीक़ा.....	6
आगरा के औलिया का मुख़्तसर तआरुफ़.....	7
आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत	15
आगरा के ग़ौस शाह मुबारक ग़ौस और 8 औलियाए किराम की प्यारी सीरत	18
ढोली ख़ार दरवाज़ा (बिजली घर चौराहा).....	18
(1) शैख़ मुबारक मज्ज़ूब.....	18
हथिया पोल (दरवाज़ा, बिजली घर चौराहा).....	20
(2) ज़ंगी शहीद	20
जामा मस्जिद (आगरा)	21
(3) ग़रीब शाह	21
घाटी मामू भंजा	23
(4) शैख़ अबुल फ़तह मक्की	23
बालूगंज (पीली कोठी, खोया मंडी के पास).....	25
(5) मुल्ला वली मुहम्मद अबुल उलाई	25
परताब पुरा (बालूगंज)	27
(6) मीर मुहम्मद जान नज़्ज़ाबंदी मुजद्दिदी	27
थाना रकाबगंज	29
(7) अब्दुल्लाह	29
(8) शैख़ अब्दुर्रहमान सूफी क़ादरी सरहिंदी.....	30
हलवाई गली	31
(9) सैय्यिद हसन शहीद	31